शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

गांधी दर्शन में अहिंसा : महत्व एवं सार्थकता

डॉ. पुरोहित कुमार सोरी, सहायक प्राध्यापक–इतिहास
शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोण्डागाँव (छ.ग.)

भूमिका :

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को परिभाषित करने का एक नाम है–महात्मा गाँधी। वे एक राजनीतिज्ञ एवं दार्शनिक के साथ–साथ सुधारवादी विचारक तथा कर्मयोगी भी थे, जिन्होंने न केवल भारत बल्कि विश्व कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उनके विचार सभी समाज, समुदाय एवं वर्गों के लिए एक समान थे। वे समानता एवं बंधुत्व की भावना के साथ मानव तथा समाज के सम्पूर्ण विकास पर बल देते थे। उनके सिद्धान्तों में सत्य एवं अहिंसा का विशेष महत्व था। गांधीजी ने सत्य के साथ अहिंसा को जोड़कर साधना के क्षेत्र में एक व्यापक बदलाव लाने का प्रयास किया। वास्तव में अहिंसा मानव–जीवन की एक सर्वोत्कृष्ट नीति है। विश्व के सभी धर्मों में अहिंसा को प्रमुख स्थान प्राप्त है, परन्तु आज की बदली परिस्थिति में अहिंसा को साधना का अंग स्वीकार नहीं किया जाता, अपितु भय के निवारण के रूप में अहिंसा का प्रयोग किया जाता है। इस कारण गांधीजी की अहिंसा के सिद्धान्तों को समझना और उसके महत्व एवं सार्थकता को अपने जीवन में उतारना सभी समाज, समुदाय एवं राष्ट्र के लिए अतिआवश्यक है।

महात्मा गाँधीजी का सम्पूर्ण दर्शन सत्य और अहिंसा के पवित्र स्तम्भ पर आधारित है। उन्होंने राजनीति को धर्म से कभी अलग नहीं माना और सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह के साधनों से भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का सफल संचालन किया। गाँधीजी ने सत्य की भांति अहिंसा को भी शाश्वत नैतिक एवं आत्मिक बल के रूप में स्वीकार किया है। गाँधीजी के अनुसार सत्य एवं अहिंसा अवियोज्य है। जहां अहिंसा साधन अर्थात् माध्यम है तो वहीं सत्य, साध्य अर्थात् लक्ष्य है। उन्होंने साधन और साध्य का चुनाव कुछ इस

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रकार किया है, जिससे कि मनुष्य को उसके सार्वजनिक जीवन में चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल मिल सके। गाँधीजी के इस अहिंसा संबंधी विचार पर भारतीय जैन दर्शन, टॉल्स्टाय एवं रस्किन के विचारों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

अहिंसा का अर्थ :

अहिंसा का साधारणतया अर्थ होता है– हिंसा का न होना अर्थात् हिंसा का विरोधी भाव ही अहिंसा है। इस प्रकार अहिंसा मूलरूप से 'न' पर आधारित होता है।[i] गाँधीजी के अनुसार सब धर्मों का सार अहिंसा है। साधन व साध्य एक है इसलिए अहिंसा स्वयं सत्य है।[ii] हिंसा के द्वारा न तो सच्चे स्वराज की प्राप्ति हो सकती है और न ही सच्चे प्रजातंत्र की, क्योंकि हिंसा के द्वारा विरोधियों का दमन तो किया जा सकता है परन्तु व्यक्ति की स्वतंत्रता का पूर्ण विकास अहिंसा से ही सम्भव है।[iii] गाँधीजी के अनुसार यदि सत्य सर्वोच्च नियम है तो अहिंसा सर्वोच्च कर्त्तव्य।[iv] व्यावहारिक अर्थ में अहिंसा हमारे संस्कारों के साथ जुड़ी हुई है, जिसमें प्रेम और त्याग की भावना का विशेष स्थान है। इसका स्वरूप समय के साथ–साथ धीरे–धीरे परिष्कृत होता जा रहा है। यह एक सामाजिक धर्म है जिसका पालन करना हम सभी का कर्त्तव्य है। इसके इसी अर्थ के कारण गांधीजी ने अहिंसा को सत्य की प्राप्ति का मार्ग बताया है। उनके अनुसार निरंतर दृढ़तापूर्वक अहिंसा का पालन करने का अर्थ है अन्ततः सत्य को प्राप्त करना।

अहिंसा के रूप :

अहिंसा के दो रूप हैं– निषेधात्मक अहिंसा और सकारात्मक या रचनात्मक अहिंसा। निषेधात्मक अहिंसा का अर्थ है किसी भी जीवधारी को किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचाना। शाब्दिक अर्थ में अहिंसा एक नकारात्मक शब्द ही है अ+हिंसा = अहिंसा अर्थात् हिंसा नहीं। अहिंसा शब्द हिंसा शब्द की धातु रूप से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है चोट पहुंचाना, हत्या करना, समाप्त करना आदि। हिंसा शब्द में अ प्रत्यय जोड़ देने से अहिंसा

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

शब्द बनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, चोट न पहुंचाना, हत्या न करना आदि। इसलिए अहिंसा एक नकारात्मक या निषेधात्मक शब्द है।[v] गाँधीजी सकारात्मक अहिंसा के माध्यम से मानवीय सहनशीलता की आवश्यकता पर जोर देते हैं। अहिंसक प्रतिरोध कोई आसानी से व्यवहार में लाया जा सकने वाला सिद्धांत अथवा किसी खतरनाक स्थिति–परिस्थिति से सुविधापूर्ण पलायन कर जाना नहीं है, न ही यह तानाशाहों के सामने वह सब पेश कर देना है कि जिसके लिए वे बलपूर्वक षडयंत्र कर रहे हैं।[vi] सकारात्मक अहिंसा में सभी प्रकार की दुर्भावनाओं, दुर्व्यसनों तथा दुष्कर्मों के स्थान पर स्नेह, विनम्रता, करूणा, न्याय तथा निर्भयता जैसे सद्भावों को महत्व दिया जाता है।[vii]

गाँधीजी हिंसा के दैवीकरण से भी परिचित थे जिसका प्रतिनिधित्व नात्सी और फासी सरकारें करती थीं। उनके दर्शन का मूलभूत तत्व यह था कि मानवीय प्रकृति सार रूप में एक जैसी है और अंततः प्रेम से वह अवश्य ही प्रभावित होगी।[viii] गाँधीजी यद्यपि सामान्य परिस्थितियों में अहिंसा के पालन को अपरिहार्य मानते हैं, परन्तु कुछ परिस्थितियों में वे इसके त्याग को वांछनीय भी कहते हैं। इनके अनुसार दैनिक जीवन के संचालन में कुछ हिंसा का होना आवश्यक है जैसे कृषि कार्य में हिंसा अनुचित नहीं है। गाँधीजी के अनुसार कायरता को अहिंसा के दामन में छुपाना भी गलत है। उनके अनुसार यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना पड़े तो हिंसा का चुनाव करना ज्यादा उचित होगा, क्योंकि हिंसा करने वाले में साहस होता है जबकि कायर में यह गुण भी नहीं होता।

अहिंसा के लक्ष्य :

गाँधीजी के दर्शन में अहिंसा के तीन लक्ष्य हैं– सत्य की प्राप्ति, प्राणीमात्र का हित तथा समाज का पुनः निर्माण। उनके अनुसार हिंसा और सत्य कभी भी एक साथ नहीं हो सकता। एक अहिंसक व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में सत्य को प्राप्त कर सकता है। यदि कोई

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

व्यक्ति प्राणियों के हित का विचार करता है तो उसे अहिंसा का पालन करना होगा क्योंकि अहिंसा को प्राणी से अलग नहीं किया जा सकता अर्थात् अहिंसा का लक्ष्य प्राणी की सेवा एवं हित है। इसी प्रकार यदि मानव समाज को आदर्ष रूप प्रदान करना है तो यह कार्य अहिंसा के बिना संभव नहीं है। प्रत्येक समाज का मूल आधार अहिंसा ही है। इस प्रकार अहिंसक व्यक्ति समाज में रहते हुए अपने और दूसरे प्राणी के प्रति प्रेम, दया और सहयोग की भावना से सत्य को प्राप्त कर सकता है।[ix] अहिंसा मात्र एक सिद्धान्त नहीं है अपितु यह एक व्यवहार है। अहिंसा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने जीवन में इसके सिद्धान्तों का पूर्णतः पालन कर व्यवहारिक जीवन में उसका सत्य के साथ सामंजस्य आवश्यक है।

अहिंसा के लिए आत्मबल आवश्यक :

गांधीजी ने अहिंसा के लिए आत्मबल को आवश्यक माना है। इसमें प्रतिहिंसा की भावना नहीं होती अपितु क्षमा की भावना होती है। प्रतिहिंसा भी एक प्रकार से दुर्बलता को प्रदर्शित करता है किन्तु क्षमा करना या माफ कर देना वीरों का आभूषण है और यह आत्मबल के माध्यम से ही हो सकता है।[x] गांधीजी ने जीवन में आत्मबल और साहस को आवष्यक माना है। अहिंसा उसी आत्मबल और साहस का प्रतिफल है। अहिंसा एक धर्म है जिसमें कायरता और निर्बलता को स्थान नहीं दिया जाता।[xi] यदि अहिंसा न हो तो मानव एक पशु के समान है। महात्मा गांधी के अनुसार– ''अहिंसा सत्य का प्राण है, उसके बिना मनुष्य पशु के समान है।'' अहिंसा वस्तुतः ईश्वर के समान है और पूज्य है। जितना प्रेम और श्रद्धा हम ईश्वर के प्रति रखते है उतना ही प्रेम और श्रद्धा अहिंसा के प्रति भी होनी चाहिए। अहिंसा हमारे लिए पूजा है और श्रद्धा उसका केन्द्र है।[xii]

अहिंसा के अमोघ अस्त्र का सहारा लेकर ही गाँधीजी ने अपने आत्मबल से दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद और जातिभेद के विरूद्ध तथा भारत की परतंत्रता को स्वतंत्रता में बदलने हेतु निश्चय किया और इसी के माध्यम से सफलता ने उनके कदम चूमे।[xiii]

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' एवं ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' जो भारतीय संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट विषेषता है, उसे गाँधीजी ने सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग एवं सद्भावना के सहारे व्यावहारिक रूप प्रदान किया।[xiv] मनुष्य स्वाभावतः अहिंसा प्रिय है क्योंकि मनुष्य के अंदर आत्मा रूप में ईश्वरीय अंश विद्यमान है, परन्तु मनुष्य अज्ञानता या परिस्थिति वश अपने स्वरूप को भूलकर हिंसक हो जाता है।[xv] इस हिंसक प्रवृत्ति को दूर करने के लिए अहिंसात्मक पद्धति का प्रयोग आवष्यक है। अहिंसा केवल बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि वह श्रद्धा और भक्ति का भी विषय है। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा को मानने वाले व्यक्ति को किसी के प्रति निर्दयता, भेदभाव, अत्याचार तथा दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। उसे जियो और जीने दो के सिद्धांत का अनुसरण करना चाहिए।[गअप]

अहिंसा एक उपासना है :

गाँधीजी अहिंसा के परम पुजारी तथा 'अहिंसा परमोधर्मः' के सच्चे उपासक थे। उनकी दृष्टि में सत्य रूपी परमेश्वर के साक्षात्कार का एक ही मार्ग है और वह है– 'अहिंसा'। उन्होंने कहा भी है– 'मै अहिंसा के मार्ग से सत्य का शोधन करता हूँ। मनसा, वाचा, कर्मणा– तीनों प्रकार से गाँधीजी अहिंसा पालन में विश्वास करते थे। उनके अनुसार मात्र किसी को शारीरिक चोट पहुंचाना या जान से मार देना ही हिंसा नहीं है, बल्कि अंहभाव, इन्द्रियलिप्सा, संकुचित स्वार्थपरता, अमानुशिक भोगवृत्ति आदि सभी हिंसा के ही प्रतिरूप हैं। विशेषकर ईर्ष्या, द्वेष और घृणा को तो वे अहिंसा का कट्टर दुश्मन समझते थे। उनका कहना थाा कि 'किसी के पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।'[xvii] इस प्रकार वे मानव समाज को आपस में प्रेमभाव से रहने को प्रेरित करते थे। जहां तक प्रेम का सम्बन्ध है, उनकी दृष्टि में प्रेम अहिंसा का ही एक अंग है। गाँधीजी निष्काम प्रेम के पुजारी थे। उनके अनुसार प्रेम की दुनिया में 'देना' शब्द है, 'लेना' शब्द नहीं और जहां प्रेम है, वहीं भगवान है।[xviii] अहिंसा का अर्थ है– प्रेम, जो केवल मनुष्य से ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों, कीड़े, मकोड़ों और पेड़–पौधों तक से करता है।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

अहिंसा एक दर्शन है :

गांधी दर्शन क्या है? इस पर विभिन्न विख्यात विचारक, लेखक और मीमांसको की राय है कि गांधी एक सामाजिक आदर्श है रामराज्य। इस रामराज्य के दो मूल स्तंभ है सत्य और अहिंसा। सत्य पर आधारित जीवन–पद्धति की खोज करना ही गांधी का आग्रह था जिसे सत्याग्रह कहा गया। इस सत्याग्रह को प्राप्त करने का माध्यम है–अहिंसा।[xix]

महात्मा गाँधी मूल रूप में एक आध्यात्मिक संत थे, जिनका उद्देश्य मानव और मानव जाति की समस्त समस्याओं को नैतिकता के आधार पर समझना और उसका हल निकालना था। वे मानवता की सेवा को ही वास्तविक अर्थों में अपना कर्तव्य समझते थे। उनका मानना था कि मानव स्वभाव से अहिंसावादी होता है परन्तु परिस्थितियाँ उसे हिंसक बना देती है। इसी कारण उन्होंने अहिंसा को मानवीय जीवन का सर्वोच्च नियम माना है, जिसके आधार पर एक व्यवस्थित समाज की स्थापना और उसकी उन्नति की जा सकती है। वे सभी को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते थे। उनके सिद्धान्तों एवं विचारों पर जैन एवं बौद्ध धर्म, गीता और उपनिषद्, अनेक साधु–सन्तों के उपदेश का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। गाँधीजी वास्तव में धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जिसके आधार पर उन्हें भारतीय परम्परा का एक महान् सन्त कहा जाता है। गाँधीजी ने अपने नाम से कोई धर्म या सिद्धान्त नहीं बनाया परन्तु उनका सम्पूर्ण जीवन ही एक दर्शन है।

गाँधीजी के दर्शन का मॉडल आज पूरे विश्व को एक नया दिशा–बोध दे रहा है। गाँधीजी को लेकर हमारे यहाँ जिस तरह का मानसिक तथा राजनीतिक माहौल बनता–बिगड़ता जा रहा है, यह उसी का नतीजा है कि आज कहीं पर गाँधी बिल्कुल अप्रासंगिक हो चुके हैं तो कहीं पर उन्हें और अधिक श्रद्धा से देखा जाने लगा है।[xx] गाँधीजी के अनुसार अहिंसा केवल मानव का सद्गुण ही नहीं, वरन् सामाजिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था का आधार भी है।[xxi]

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

निष्कर्ष : वर्तमान में अहिंसा के महत्व और सार्थकता पर विशद् चर्चा–परिचर्चा हो रही है। मानव अस्तित्व एवं विकास में अहिंसा के महत्व और सार्थकता को नकारा नहीं जा सकता। आज जब भी हम विश्वबंधुत्व की बात करते हैं तो हमें सर्वप्रथम महात्मा गांधी की अहिंसा को याद करना होता है क्योंकि विश्वबंधुत्व की भावना के मूल में अहिंसा ही सर्वोपरि है। इसी कारण विश्व के सभी धर्मों में कहीं न कहीं अहिंसा को महत्व दिया गया है। सभी धर्मों ने अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन करना सिखाया है। अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन कर ही हम विश्व में शांति और बंधुत्व की भावना को स्थापित कर सकते है।

आज जिस तरह देश–विदेश में हिंसा का माहौल है और एक देश दूसरे देश को शक की निगाह से देख रहा है। ऐसे समय में गाँधी दर्शन की आवश्यकता सभी को है, जिससे हिंसा का माहौल समाप्त हो सके। वर्तमान में विश्व पटल पर भारत देश गाँधीजी को श्रद्धांजलि स्वरूप आजादी के 75वें वर्ष को गाँधीजी का अमृत्वकाल के रूप में मना रहा है, जिससे उनके विचारों को जन–जन तक पहुंचाया जा सके। इससे ही स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी दर्शन के अहिंसा की महत्ता और सार्थकता आज भारत ही नहीं पूरे विश्व को महसूस हो रही है। हमें गाँधी दर्शन के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का मार्ग, महात्मा फुले का सत्यधर्म का मार्ग, डॉ. अम्बेडकर का दलित एवं पिछड़े लोगों को संगठित करने वाला मार्ग स्वीकार करना होगा और संसदीय लोकतंत्र की मर्यादा को बनाये रखना होगा तभी हम ''गाँधीजी के सपनों का भारत'' के निर्माण की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

संदर्भ :

[i] न्यायतीर्थ, पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, अहिंसा–दर्शन, श्री सन्मति ज्ञानपीठ आगरा, 1956, पृ. 42

[ii] शर्मा, बी.एम., रामकृष्ण दत्त शर्मा एवं सरिता शर्मा, भारतीय राजनीतिक विचारक, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2005, पृ. 279

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 2, जनवरी-मार्च 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

[iii] हरिजन, 25 मई, 1931

[iv] रिचर्ड ग्रे के साथ गाँधीजी की बातचीत, पॉवर ऑफ नॉन वॉयलेन्स, पृ. 276

[v] कुमार, हरीश, गांधी सामाजिक राजनैतिक परिवर्तन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नईदिल्ली, 2009, पृ. 42–43

[vi] नन्दा, बलराम, अनुवादक–वीरेंद्र कुमार गुप्त, गाँधी और उनके आलोचक, सारांश प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2000 पृ. 132

[vii] कुमार, हरीश, पूर्वोक्त, पृ. 48

[viii] नन्दा, बलराम, पूर्वोक्त, पृ. 132

[ix] शास्त्री रमेष चन्द्र, गांधी जी सत्य और अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में, राजस्थान प्रकाशन, 1970, पृ. 87

[x] रोला रोमा, महात्मा गांधी, सूचना एवं प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1948, पृ. 113

[xi] महात्मा गांधी, हिन्दी नवजीवन,

[xii] न्यायतीर्थ, पं. शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, पूर्वोक्त, पृ. 24

[xiii] शर्मा, बी.एम., रामकृष्ण दत्त शर्मा एवं सरिता शर्मा, पूर्वोक्त, पृ. 280

[xiv] सिंह, परमेश्वर प्रसाद, संसार के महान शिक्षाशास्त्री, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ. 93

[xv] जैन, पुखराज, राजनीतिक चिन्तन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 302

[xvi] कुमार, हरीश, पूर्वोक्त, पृ. 47

[xvii] सिंह, परमेश्वर प्रसाद, संसार के महान शिक्षाशास्त्री, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ. 91

[xviii] उपरोक्त, पृ. 92

[xix] पंकज, अश्विनी कुमार, आदिवासी और गांधी, नोशन प्रेस, इण्डिया, 2021, पृ. 79

[xx] रत्तू, कृष्ण कुमार, भारत : वर्तमान परिदृश्य, बुक एनक्लेव, जयपुर, 2003, पृ. 170

[xxi] जैन, पुखराज, पूर्वोक्त, पृ. 304